मधुबन ओम् शान्ति अंक 357 अप्रैल 2022

पत्र-पुष्प

"बोल में मधुरता और कर्म में नम्रता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है"
दादी जी की शुभ प्रेरणायें (21-03-22)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपनी शुभचिंतक वृत्ति द्वारा विश्व परिवर्तन की सेवा पर उपस्थित, मधुरता और नम्रता के गुण को जीवन में धारण कर महादानी, वरदानी बन संगठन में स्नेह का सबूत देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - समय प्रमाण आप सभी विशेष स्व-सेवा और विश्व-सेवा का बैलेन्स रखते हुए बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का पुरुषार्थ कर रहे होंगे। बाबा कहते बच्चे, अब दु:खी अशान्त आत्माओं को सुख शान्ति की अंचली दो, व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ बनो और अन्तिम समय को समीप लाओ। जैसे वाणी की सेवा धूमधाम से की है, ऐसे अभी मन्सा द्वारा सकाश देना, हिम्मत देना, उमंग-उत्साह देना, इस सेवा की विशेष आवश्यकता है। इसके लिए हर एक को अपने पूर्वज और पूज्यपन के स्वमान में रह पूरे कल्प वृक्ष को शक्तियों की सकाश देनी है। बोलो, सभी ऐसी सूक्ष्म सेवा कर रहे हो ना! अभी अपनी श्रेष्ठ मन्सा द्वारा सर्व आत्माओं को बाप के समीप लाना है। अपने चेहरे और चलन द्वारा, नयनों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है। जैसे बाप का स्वभाव सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का है, हर एक को ऊंचा उठाने का, मधुरता और निर्मानता का है, ऐसे अपना स्वभाव बनाना है। तेज़ बोलने का, आवेश में आने का स्वभाव ब्राह्मण जीवन में बहुत बड़ा विघ्न है। ऐसे स्वभाव का अब परिवर्तन करना है। मंसा का एक एक संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो।

देखो, ड्रामानुसार दो वर्षों के बाद अभी वर्गीकरण की सेवायें फिर से शुरू हुई हैं। जो भी सेवा का चांस मिलता है, वह करते हुए अपनी स्व-स्थिति पर विशेष अटेन्शन देना है। कोई भी छोटी-मोटी हद की बातें स्थिति को डगमग न कर दें। बड़े से बड़ी बात को भी छोटा बना देना, यही महावीर आत्मा की निशानी है। अब अपने संकल्पों को, समय को व्यर्थ से बचाकर सदा विश्व कल्याण की सेवा में तत्पर रहना है। अभी बाबा के बेहद मधुबन घर में भी देश विदेश के अनेकानेक बच्चे विशेष एकान्त वा एकाग्रता की तपस्या भट्ठी करके स्वयं को समर्थ बना रहे हैं। पाण्डव भवन, शान्तिवन, मानसरोवर, मनमोहिनीवन आदि सभी स्थानों पर योग तपस्या की अच्छी लहर चल रही है। ज्ञान सरोवर में कुछ डबल विदेशी भाई बहिनें भी विशेष रिफ्रेश हो रहे हैं। बाबा की यह तपस्या स्थली ब्राह्मण बच्चों में एक नई ऊर्जा भर देती है। जब भी चांस मिलता है सभी भाग-भाग कर मधुबन घर में पहुंच जाते हैं।

अभी 2022-2023 में विशेष स्व-उन्नति और सेवाओं में नवीनता के लिए वार्षिक मीटिंग भी रखी गई है। जरूर सभी मिलकरके उमंग-उत्साह से पूरे वर्ष के लिए बहुत अच्छे-अच्छे प्लैन्स बनायेंगे। मधुबन के आगामी कार्यक्रमों की बुलेटिन्स भी आप सबको मिलती रहेंगी। बाकी आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। ज्ञान योग की शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्रकृतिजीत, मायाजीत बनना है। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

1) मधुरता के गुण को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं। तो यह मधुरता का विशेष गुण हर बच्चे में होना चाहिए। मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला कर सकेंगे। मधुरता की मधु जिनके साथ है उन्हें हर कार्य में सफलता ही सफलता है। उनके जीवन से असफलता मिट जायेगी।

2) मधुरता का गुण जीवन में तब आयेगा जब अपनी वा दूसरे की बीती को न देख अन्दर के संस्कारों को सरल बनायेंगे। सरलचित आत्मा का गुण है ही मधुरता। उनके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है।

3) मधुरता और नम्रता, इन दो विशेष धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे। मधुरता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है। जहाँ मधुरता है वहाँ ही पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। तो सदा मधुर बनो, यही सर्विस में सफलता का आधार है।

4) वाचा में सदा सत्यता और मधुरता हो तो वाणी की मार्क्स जमा होती रहेंगी। मधुरता का गुण जीवन में है तो हर बोल मोती समान होंगे। ऐसे लगेगा जैसे बोल नहीं रहे हैं, मोतियों की वर्षा हो रही है। वे ऐसा बोल बोलेंगे जो सुनने वाले सोचेंगे कि ऐसा बोल हम भी बोलें। सबको सुनकर सीखने की, फालो करने की प्रेरणा मिलेगी। ऐसे मधुर बोल का वायब्रेशन सर्व को स्वत: ही खींचता है।

5) आप महान आत्माओं का हर मंसा संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो। जैसे बाप का स्वभाव सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का है, हर एक को ऊंचा उठाने का, मधुरता और निर्मानता का है। ऐसे अपना स्वभाव बनाओ। अगर तेज़ बोलने का, आवेश में आने का स्वभाव है तो यह भी ब्राह्मण जीवन में बहुत बड़ा विघ्न है। अब ऐसे स्वभाव का परिवर्तन करो।

6) जैसे मीठा खाने और खिलाने से थोड़े समय के लिए मुख मीठा होता है, खुश होते हैं। ऐसे स्वयं ही मीठा बन जाओ तो सदा ही मुख में मधुर बोल रहेंगे। ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करेंगे, दूसरे को भी खुश करेंगे। इसी विधि से सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो, सदा मीठी दृष्टि, मीठा बोल, मीठे कर्म हो।

7) किसी भी आत्मा को दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो, मीठे बोल बोल दो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे। यह दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उस आत्मा की सृष्टि बदल देंगे। दो मधुर बोल सदा के लिए बदलने के निमित्त बन जायेंगे।

8) मधुरता ऐसी विशेष धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। आप सभी को बदलने का आधार बाप के दो मधुर बोल हैं - मीठे बच्चे, तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो। इन दो मधुर बोल ने ही बदल दिया। मीठी दृष्टि ने बदल दिया। ऐसे ही मधुरता द्वारा औरों को भी मधुर बनाओ। यह मुख मीठा करो। सदा इस मधुरता की सौगात को साथ रखो। इसी से सदा मीठा रहेंगे और मीठा बनायेंगे।

9) मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार कराओ। आपके संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता, कर्म में भी मधुरता हो - यही बाप की समीपता है, इसलिए बाप भी रोज़ कहते हैं - 'मीठे-मीठे बच्चों' और बच्चे भी रेसपान्ड करते - 'मीठे-मीठे बाबा'। यही रोज़ का मधुर बोल मधुर बना देता है।

10) आपके बोल में स्नेह भी हो, मधुरता और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो। निर्भय होकर अथॉरिटी से बोलो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – दोनों बातों का बैलेन्स हो – जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं। तो अथॉरिटी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। यही बाप की प्रत्यक्षता का साधन है।

11) जिनमें मधुरता और नम्रता का गुण है वह सदा झुकते हैं। जितना आप संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। संस्कार में भी झुकना। यह संकल्प भी न हो दूसरे हमारे आगे भी तो कुछ झुकें! हम झुकेंगे तो सभी झुकेंगे। जो सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब सेवा कर सकेंगे।

12) जितना बुद्धि में नशा हो, उतना ही कर्म में नम्रता और बोल में मधुरता हो। ऐसे नशे में रहने से कभी नुकसान नहीं होगा। सिद्धि को पाने वाले, स्वयं को नम्रचित्त, निर्मान, हर बात में अपने आपको गुणग्राहक और मधुरता सम्पन्न बनायेंगे।

13) कुछ भी हो जाए लेकिन अपना स्वभाव सदा निर्मल रखो। यह निर्मल स्वभाव निर्मानता की निशानी है। तो अण्डरलाइन करो 'निर्मल स्वभाव', बिल्कुल शीतल। बात जोश दिलाने की

हो लेकिन आप निर्मल हो। ऐसी निर्मल, निर्मानचित्त वाली आत्मायें ही निर्माण का कार्य सहज कर सकती हैं।

14) अगर आप से कोई टक्कर लेता है तो आप उसे अपने स्नेह का पानी दो, आप अपने मधुरता और नम्रता के गुण को नहीं छोड़ो। नम्रता की ड्रेस पहनकर रहो। यह नम्रता ही कवच है, जो सेफ्टी का साधन है। कोई आग समान जला हुआ, बहुत गरम दिमाग वाला आपके सामने आये तो वह आपके मधुर व खुशनुमा: वायब्रेशन की छाया में शीतल हो जाए।

15) नम्रचित्त आत्मा सहज ही सुखदाता बन सकती है लेकिन अभिमान नम्रचित्त बनने नहीं देता। नम्रचित्त नहीं तो सेवा हो नहीं सकती। सेवाधारी की विशेषता सदा नम्रचित, स्वयं झुका हुआ होगा तब औरों को झुका सकेगा। जितना नम्रचित होंगे उतना निर्माण करेंगे। जो निर्मान हैं उनमें रोब नहीं होगा, रुहानियत होगी। जैसे बाप कितना नम्रचित्त बनकर आते हैं, ऐसे फालो फादर।

16) संगठन वा सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए सदा नम्रचित्त के तख्त पर विराजमान रहो। निर्मान बनना ही स्वमान है और सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। निर्मान बनना झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुकाना है।

17) निर्मानता निरहंकारी सहज बनाती है। निर्मानता का बीज महानता का फल स्वत: ही प्राप्त कराता है। निर्मानता सबके दिल की दुआयें प्राप्त करने का सहज साधन है। निरहंकारी आत्मा की वृत्ति, दृष्टि, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें निर्मानता दिखाई देगी। जैसे वृक्ष का झुकना सेवा करता है, ऐसे निर्मान बनना अर्थात् झुकना ही सेवाधारी बनना है इसलिए एक तरफ महानता हो तो दूसरे तरफ निर्मानता हो।

18) जो सदा निर्मान रहता है वह सर्व द्वारा मान पाता है। स्वयं निर्मान बनेंगे तो दूसरे मान देंगे। जो अभिमान में रहता है उसको कोई मान नहीं देते, उससे दूर भागेंगे। जो निर्माण होते हैं वह सबको सुख देते हैं। जहाँ भी जायेंगे, जो भी करेंगे वह सुखदायी होगा। उनके सम्बन्ध-सम्पर्क में जो भी आयेगा वह सुख की अनुभूति करेगा।

19) सेवाधारी की विशेषता है - एक तरफ अति निर्मान, वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अथॉरिटी। जितना ही निर्मान उतना ही बेपरवाह बादशाह। निर्मान और अथॉरिटी दोनों का बैलेंस। निर्मान-भाव, निमित्त-भाव, बेहद का भाव - यही सेवा की सफलता का विशेष आधार है।

20) जितना ही स्वमान उतना ही फिर निर्मान। स्वमान का अभिमान नहीं। ऐसे नहीं – हम तो ऊंच बन गये, दूसरे छोटे हैं या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिए। कैसी भी आत्मायें हों लेकिन रहम की दृष्टि से देखो, अभिमान की दृष्टि से नहीं। न अभिमान, न अपमान। अभी ब्राह्मण-जीवन की यह चाल नहीं है। ब्राह्मण अर्थात् सदा निर्मान और निर्माण के कार्य में बिज़ी।

21) शुभ-भावना, शुभ-कामना का बीज ही है निमित्त-भाव और निर्मान-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्मान। निर्मान होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करना ही सभ्यता वा सत्यता है।

22) सफलता का सितारा तब बनेंगे जब स्व की सफलता का अभिमान न हो, वर्णन भी न करे। अपने गीत नहीं गाये, लेकिन जितनी सफलता उतना नम्रचित, निर्मान, निर्मल स्वभाव। दूसरे उसके गीत गायें लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गाये। ऐसी निर्मानता, निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते।

23) नम्रचित, निर्मान वा हाँ जी का पाठ पढ़ने वाली आत्मा के प्रति कभी मिसअण्डरस्टैण्डिगं से दूसरों को हार का रूप दिखाई देता है लेकिन वास्तविक उसकी विजय है। सिर्फ उस समय दूसरों के कहने वा वायुमण्डल में स्वयं निश्चयबुद्धि से बदल शक्य (सशंय) का रूप न बनें। पता नहीं हार है या जीत है! यह शक्य न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो जिसको आज दूसरे लोग हार कहते हैं, कल वाह-वाह के पुष्प चढ़ायेंगे।

24) संस्कारों में निर्मान और निर्माण दोनों विशेषतायें मालिक-पन की निशानी हैं। साथ-साथ सर्व आत्माओं के सम्पर्क में आना, स्नेही बनना, सर्व के दिलों के स्नेह की आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावना सबके अन्दर से उस आत्मा के प्रति निकले। चाहे जाने, चाहे न जाने दूर का सम्बन्ध वा सम्पर्क हो लेकिन जो भी देखे वह स्नेह के कारण ऐसे ही अनुभव करे कि यह हमारे हैं।

25) जितना ही गुणों रूपी फल स्वरूप बनो उतना ही निर्मान बनो। निर्मान स्थिति द्वारा हर गुण को प्रत्यक्ष करो तब कहेंगे धर्म सत्ता वाली महान आत्मा। अगर निर्मान नहीं, मान की इच्छा है तो बोझ हो जायेगा। बोझ वाला सदा रूकेगा। तीव्र नहीं जा सकता, इसलिए अगर कोई भी बोझ अनुभव होता है तो समझो निर्मान नहीं हैं।

26) ब्रह्मा बाप सदा निर्मान होकर ऐसे सेवाधारी बनें जो बच्चों के पांव दबाने के लिए भी तैयार। बच्चे मेरे से आगे हैं, बच्चे मेरे से भी अच्छा भाषण कर सकते हैं। 'पहले मैं' कभी नहीं कहा। आगे बच्चे, पहले बच्चे, बड़े बच्चे कहा। तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है, ऊंचा जाना है। दूसरे को मान देकरके स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

27) अल्पकाल के विनाशी मान का त्याग कर स्वमान में स्थित हो, निर्मान बन, सबको सम्मान देते चलो। सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्लास में लाकर आगे करना। यह

सदाकाल का उमंग-उत्साह अर्थात् खुशी का वा स्वयं के सहयोग का खजाना, आत्मा को सदा के लिए पुण्यात्मा बना देता है।

28) कोई भी चीज़ को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ भी गर्माई है शक्ति रूप और नर्माई है निर्मानता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही नम्रचित रह सकता है। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे, न नम्रचित। शक्तिरूप में है मालिकपन और नम्रता में है सेवा का गुण। तो जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे।

29) बुद्धि में जितना स्वमान का नशा रहे उतना कर्म में नम्रता रहे। जैसे ऊंच-ते ऊंच बाप भी बच्चों के आगे सेवाधारी बन कर आते हैं तो नम्रता हुई ना! जितना ऊंच उतना ही नम्र – ऐसा बैलेन्स रहे क्योंकि विश्व का कल्याण नम्रता के बिना हो नहीं सकता। बाप को भी अपना तब बनाया जब बाप भी नम्रता से बच्चों के सेवाधारी बने। ऐसे ही फॉलो फादर।

30) सदा स्मृति रहे कि मैं मास्टर विश्व-निर्माता हूँ। निर्माण का कार्य करने के लिए निर्मानता अर्थात् सरलता का गुण नेचुरल रूप में होना चाहिए। जहाँ सरलता है वहाँ मधुरता, नम्रता आदि अन्य गुण स्वत: आ जाते हैं। तो सदैव इस स्मृति स्वरूप में स्थित रह स्वयं को मास्टर विश्व-निर्माता समझ कार्य करो तो माया के छोटे-छोटे विघ्न बच्चों के खेल समान लगेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

बाप टीचर और सतगुरु के सम्बन्ध की अनुभूतियां और उससे प्राप्तियां

(गुल्जार दादी जी - 2006)

सभी ब्राह्मणों का जन्म स्थान मधुबन है। मधुबन ही आपका पर्मानेन्ट एड्रेस है। मधुबन शब्द याद आते ही वैराग्य और मिठास का अनुभव होने लगता है। यहाँ ऐसे माया आती नहीं, आयी तो भी हम उसके वश नहीं रहते, जल्दी मायाजीत बन जाते हैं क्योंकि यहाँ वायुमण्डल का सहयोग है।

बाबा कहते हैं आप सभी ब्राह्मण पुरुषार्थी हैं, राजयोगी हैं। सभी का लक्ष्य बाप समान बनने का है। जैसा लक्ष्य दृढ़ (पक्का) होता है, वैसे ही लक्षण प्रैक्टिकल लाइफ में आते हैं। इसके लिए बाबा के साथ जो सर्व सम्बन्ध हैं वो होने चाहिए। उसमें भी खास करके आवश्यक तीन सम्बन्ध बाप, टीचर, सतगुरू के जो बाबा बताते हैं, वो तो पक्के होने चाहिए। सबसे पहले बाप का सम्बन्ध है, उससे वर्सा मिलता है। पति पत्नि के सम्बन्ध में, पोत्रे-धोत्रे के या और कोई भी जो सम्बन्ध हैं उसमें फुल वर्से के अधिकारी नहीं होते हैं। एक ही बाप और बच्चे का सम्बन्ध है, जिसमें बच्चे को बाप का पूरा वर्सा जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त होता है। तो बाप कहने से हमको उसका वर्सा याद आता है, प्राप्ति याद आती है। हमें वर्सा मिलता है मुक्ति और जीवनमुक्ति का। अभी हम सबको बाबा के वर्से में ज्ञान, गुण और शक्तियों की प्राप्ति होती हैं। इन्हीं प्राप्तियों के आधार पर हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं। तो सार है बाप के रूप में वर्से की स्मृति, और वर्सा तब मिलेगा जब हम गुण और शक्तियों को धारण करेंगे। बाप और बच्चे के सम्बन्ध में विशेष एक तो अधिकार फील होता है। उस अधिकार का नशा और खुशी रहती है। जैसे कोई राजा का बच्चा है तो उसको कितना नशा रहता है, ऐसे हम परमात्मा के बच्चे हैं, यह नशा रहे।

टीचर माना पढ़ाई, टीचर को स्मृति में रखेंगे तो पढ़ाई याद आयेगी। जीवन में कमाई का सोर्स - टीचर और पढ़ाई है। एज्यूकेशन को सोर्स ऑफ इनकम कहा जाता है। तो हमें भी यह नशा रहता है कि इस पढ़ाई से जन्म-जन्मान्तर के लिए हमें राज्य-भाग्य प्राप्त होता है। जब हम बाबा की हर श्रीमत पर चलते हैं तो वही सतगुरू के साथ का सम्बन्ध है। अमृतवेले से ही हर कर्म की श्रीमत है, कोई भी कर्म करना है तो बाबा की याद में कर्मयोगी बनके करना है। जो श्रीमत देने वाला होता है, उसको गुरू कहा जाता है, ऐसे यहाँ हमारा बाबा ही हमें श्रीमत देते हैं, वही हमारा सतगुरू हो गया। अभी सतगुरू का पार्ट चल रहा है।

दुआ देना माना क्या? जब हम परिवार के कनेक्शन में आते हैं तो हरेक के भिन्न-भिन्न संस्कार होते हैं, सबके एक जैसे संस्कार नहीं होते। जिसको हम कहते हैं नेचर, किसकी तेज माना क्रोध के अंश वाली नेचर होती है, किसकी बहुत डल होती है। कईयों में फिर ईर्ष्या के, अनुमान के संस्कार होते हैं। ऐसे भिन्न-भिन्न संस्कार जो हैं, वो हमारी अवस्था को नीचे करते हैं। बाबा कहते हैं कि इस प्रकार के तरह तरह के संस्कार तो होंगे क्योंकि सबको नम्बरवन तो बनना नहीं है। विजयमाला 108 की है, तो कोई पहला एक नम्बर बना, कोई लास्ट 108 वाँ नम्बर

बना, उसका कारण क्या है? उनका पुरुषार्थ जो है, संस्कार जो हैं वो परिवर्तन नहीं हुए तो संस्कार भिन्न-भिन्न होंगे लेकिन हम अपने को संस्कारों के टक्कर से बचाकर चलें। कोई हैं जो विकारों के वश हैं, वह बंधे हुए दूसरे को छुड़ा सकते हैं क्या? तो एक को देख करके मेरे में वह बुराई न आ जाये इसलिए बाबा कहता है आप यही लक्ष्य रखो कि मुझे दुआ देनी है। उसके वश नहीं होना है लेकिन मुझे दुआ देनी है क्योंकि मुझे बाबा की श्रीमत यह है कि दुआ देना है, तो फीलिंग भी नहीं आयेगी, ईर्ष्या वा घृणा भी नहीं आयेगी। दुआ देंगे तो इन सबसे छूट जायेंगे। दुआ देना माना सबके प्रति बहुत अच्छी भावना रखनी है और हर तरह से सहयोग देना है।

दुआ लेना माना क्या? कोई कुछ भी कहे, हमको कुछ भी उल्टा सुल्टा बोले तो भी उससे हम दुआ लेवें यानि यह समझें कि मेरे को याद दिलाता है कि मैं परमात्मा का बच्चा सहनशील हूँ, मैं ऊंचे ते ऊंची आत्मा हूँ। वह क्रोध करके मुझे याद दिलाता है कि आप तो सहनशील हो। मैं परवश हूँ लेकिन आप वह हो। तो वह भले बद्दुआ देवे लेकिन हम समझते हैं कि वह हमको स्मृति दिलाता है। मान लो रास्ते में किसी का अचानक एक्सीडेन्ट होता है, हम उसके पहचान वाले नहीं हैं लेकिन उसके पास जाके थोड़ा पूछते हैं, उठाते हैं, हॉस्पिटल तक पहुँचाते हैं, तो उस समय उसके दिल से क्या शब्द निकलते हैं? आपको कभी नहीं भूलेंगे, जीवनभर आपको याद करेंगे, तो यह दुआ हुई ना। तो आपने दुआ दी, उसने भी दुआ दी। ऐसे दुआयें देते और लेते चलो। अच्छा।

दु:ख अशान्ति का कारण है अपवित्रता, सदा सुखी रहना है तो पवित्र और योगी बनो

(दादी जानकी)

1) आप सब जानते हो कि आज दुनिया में दु:ख, अशान्ति बढ़ रहा है, क्यों बढ़ रहा है? कारण तो हरेक के अपने अपने होंगे लेकिन टोटली अगर हम देखें तो सभी का सम्बन्ध परमात्मा पिता से टूटा हुआ है। ऐसे पिता को हम पहचानकर याद करें, योग लगायें, तो दु:ख, अशान्ति से छूट सकते हैं।

2) सभी यह तो समझते ही हैं कि पवित्रता बहुत अच्छी चीज़ है। अपवित्रता दु:ख का कारण है और पवित्रता सुख का कारण है। तो हर एक क्या पसंद करता है सुख या दु:ख? सुख ही पसंद करता है ना। यूँ तो सुखी रहते भी होंगे, लेकिन सदा सुखी रहें, कोई भी बातें आये लेकिन मेरे सुख को कोई ले नहीं जा सकता क्योंकि हम बच्चे किसके हैं? हम परमात्मा को पिता कहते हैं, तो हम उनके बच्चे हैं। लेकिन आज उस बाप को भूलने के कारण ही दु:ख आता है। मनुष्य चाहता तो यही है कि हम सदा सुखी रहें और सहज ते सहज साधन है परमात्मा की याद मन में हो, बस क्योंकि तन से तो भिन्न-भिन्न कार्य करना पड़ता है, मनुष्य जीवन है, तो जीवन के लिए कर्म तो करना ही पड़ता है। लेकिन हमारी मूल चीज़ है जीवन की विशेषता - सुख और शान्ति। वो हमारी रहे, उसके रहने के लिए प्रयत्न तो सब करते हैं। लेकिन हमारे जन्म-जन्म के पिता अविनाशी सुख दाता, शान्ति दाता हैं, उसको हम भूलते क्यों हैं? लौकिक पिता की याद सूक्ष्म में होती ही है। ऐसे ही परमात्मा जो हमारा सदा का पिता है, अविनाशी है तो अविनाशी पिता को भूलना नहीं चाहिए लेकिन भूल जाता है इसलिए बीच-बीच में परमात्मा की याद में रहने का अभ्यास जो है, उसको पक्का कराने के लिए यह भिन्न-भिन्न प्रोग्राम रखे जाते हैं।

3) परमात्मा कहने से ही सुख शान्ति की लहर आ जाती है। तो आप सबको सुख शान्ति का रास्ता मिल गया है या मिलेगा! परमात्मा की याद सदा दिल में रहे, उसके लिए यह संगठन किया जाता है। परमात्मा हमारा पिता है, यह तो सब जानते हैं लेकिन परमात्मा है कौन! उसका भी सबको पता होना चाहिए। जब भी दु:ख होता है तो कौन याद आता है? परमात्मा को याद करते हैं। तो वो सुख दाता हुआ ना।

4) व्यापार करते हुए भी उस दाता की याद रहती है ना! भले थोड़ा टाइम के लिए रहती है फिर मर्ज हो जाती है लेकिन मनुष्य आत्मायें चाहती तो हैं सदा सुख शान्ति रहे। परमात्मा की याद रहेगी तो खुशी भी जरुर रहेगी। मनुष्य यही चाहता है ना कि हम खुश रहें, सुखी रहें, आबाद रहें, तो उसके लिए परमात्मा पिता की याद में सदा रहना।

5) परमात्मा मेरा पिता है, पहले यह स्मृति पक्का करो तो दु:ख के टाइम उसकी याद आने से कभी टेन्शन वा गुस्सा नहीं आयेगा। परमात्मा तो ऐसे मददगार है, जिस समय आपको जो चाहिए उस समय हाज़िर हो जाता है क्योंकि हम उनके बच्चे हैं और वो हमारा पिता है। पिता के नाते से भी हमारा हक लगता है, पिता के पास जो है वो जरुर बच्चे को देना ही पड़ेगा। लेकिन ऐसे पिता को याद करना, हमारा प्यार भी है फर्ज़ भी है। तो अभी थोड़ा समय के लिए और सभी बातें दिल में मर्ज करके परमात्मा की याद में बैठो तो बड़ा आनंद आयेगा। अच्छा।

डीप पुरुषार्थ करके संकल्पों में शान्ति लानी है, प्रेम सम्पन्न बनना है

(दादी जानकी)

1) बाबा से जो हम बच्चों को अच्छी-अच्छी शिक्षायें मिल रही हैं यही बाबा का प्यार है। बाबा कितना प्यार से शिक्षा देते हैं, बच्चे जो बात तुम्हारे काम की नहीं है वो नहीं करो। गुस्से की जरा भी परसेन्ट न रहे, इतनी योग अग्नि हो, जो हम सुख-शान्ति, शीतलता के देव बन जायें। तीनों चीज़ें हमें बाबा से वर्से के रूप में मिल जायें। शिवबाबा, भाग्यविधाता और वरदाता है, तो कोई बड़ी बात नहीं है।

2) हर आत्मा शरीर द्वारा अपना-अपना पार्ट बजाती है, हरेक का पार्ट अपना है। बाबा हमारा शिक्षक और सतगुरु है। धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करने वाला वही धर्मराज़ है। पर हमको स्वधर्म में स्थित होके, स्नेह और आपसी सहयोग से सतयुगी राजधानी स्थापन करनी है। हम योगी भी बाबा के सहयोग से ही बने हैं।

3) यहाँ कोई कर्म को छोड़ करके योगी नहीं बना है। हमारे कर्मयोग से अनेक पुराने जन्मों के विकर्म विनाश हो गये, संस्कार शुद्ध हो गये। अगर कुछ रहा हुआ है तो अन्दर खिटपिट होगी जरुर। अगर पुराना खलास हो गया तो आत्मा शुद्ध, शान्त और शीतल है, फिर जो भी उनके संग में आते हैं वो भी ऐसे बन जाते हैं। यह कमाल है हमारे बाबा की। बाबा के संग में रहते-रहते अच्छा रंग चढ़ गया है। बाबा के सामने कोई उबासी नहीं दे सकता था, किसी की आँख बन्द नहीं होती थी। तो हमारी यह स्टूडेन्ट लाइफ भविष्य का निर्माण करती है। बाबा ने कर्मों की गुह्यगति का ऐसा ज्ञान दिया है, अच्छी तरह से बता दिया है ताकि अभी हर समय, हर सेकेण्ड मन वचन कर्म से श्रेष्ठ बन करके रहें।

4) सर्वशक्तिवान बाबा में सारा ज्ञान है, वह नॉलेजफुल है पर असोचता है। बाबा करनकरावनहार है, पर अकर्ता है। ऐसे ही दु:ख सुख में नहीं आता है इसलिए अभोक्ता है। तो हम बाबा के बच्चों की भी ऐसी स्थिति आ सकती है, इसके लिए बहुत गहराई में जाना होगा। ड्रामा में क्या है, जो सीन चल रही है वो बाबा हर क्षण बता रहा है, सिखा रहा है कि तुम ऐसे चलो। अच्छे एक्टर्स का ध्यान डायरेक्टर के गुप्त इशारों पर होता है। ड्रामा का डायरेक्टर, क्रियेटर ही अब मुख्य एक्टर के रूप में पार्ट बजा रहा है, उसको अगर न जाने तो वो कौन है? बाबा का कितना बड़ा पार्ट है वो हम सब जानते हैं। बाबा ने बताया है और हम देख रहे हैं। उनकी हर एक्शन में हम भी शामिल हैं।

5) भक्त जिनका दर्शन करने के प्यासी हैं, हम उनके साथी बनें हैं तो हमारे कर्म कितने ऊंचे बलवान होने चाहिए। आलराउण्ड पार्ट में एक्यूरेट और एवररेडी रहना शोभता है। तो जो कर्म हम करते हैं, वो अपने लिए करते हैं और किसके लिए नहीं करते हैं। बाबा ने जो इशारा दिया है, उसी अनुसार करते हैं। सुबह उठने से लेके रात्रि तक जैसे तुम करोगे तुमको देख और करेंगे। तो बाबा ने आत्मा को अपना बनाके समझदार बनाया है तो सच्चे बनो, सहयोगी बनो और स्नेही रहो।

6) अभी हमें अन्दर से डीप पुरुषार्थ करके अपने संकल्पों में शान्ति लानी है, प्रेम सम्पन्न बनना है। ज्ञान कहता है अन्दर की खुशी हो, शक्ति हो। अपने ही संकल्पों की गहराई में जाओ तो युद्ध का संस्कार समाप्त हो जायेगा। कोई कारण भी बने तो भी विजयी बनो, योद्धे नहीं बनो। अब छोटी-छोटी बातों को बड़ा बनाकर लड़ते-झगड़ते नहीं रहो। संकल्प को शुद्ध और शान्त रखने की आदत डालो।

7) ब्राह्मण हूँ, स्वदर्शन चक्रधारी हूँ, तो संकल्प धीरे-धीरे चलेंगे, जरुरी काम के संकल्प आयेंगे। नहीं तो शान्त रहेंगे। अन्दर के पुरुषार्थ में शान्ति रहे तो संकल्पों को नियंत्रित रख सकते हैं। बोलते, करते सबको अच्छा अच्छा कहके अन्दर शान्त रहना है। अन्दर की शान्ति हमारे रूट में (जड़ों में) चली जाये, मेरे में जरा भी अशान्ति न हो।

8) संकल्पों में अगर शान्ति शुद्धि होगी तो वो वायब्रेशन पहुँचेंगे। कलह वाले नहीं होंगे, मिलनसार होंगे। मुस्कराहट भी ऐसी होगी, जो खुश हो जायेंगे। अगर अन्दर चला गया तो फल अच्छा निकलेगा, जिसको कहा जाता है सफलता। संकल्प में, वाणी चाहे कर्म में, सम्बन्ध में सफलता होगी। ऐसे अन्दर ही अन्दर अपने संकल्प की उत्पत्ति शान्ति वाली हो, स्नेह वाली हो। कुछ काम वाले संकल्प हो, अच्छी वृत्ति से अच्छा वायब्रेशन फैलायें।

9) बाबा का एक बोल सदा याद रहता है सी फादर, फॉलो फादर। यह आँखें बाबा को देखने के लिए हैं। अगर आँखें इधर उधर होंगी तो फॉलो नहीं कर सकेंगे। मुझे अन्दर लगन है, इच्छा है सिर्फ फॉलो फादर करने की। योग शिवबाबा से लगाना है लेकिन फालो ब्रह्मा बाबा को करना है। यह बाबा कैसे कर्म कर रहा है, स्थापना का इतना बड़ा कार्य है, फिर भी उन्हें कोई जवाबदारियां थकाती नहीं हैं। हमारी जिम्मेवारी है सिर्फ अपनी स्थिति अच्छी रखने की।

10) मुझे ध्यान रहता है कि कर्म व सम्बन्ध में साधारणता की नेचर यूज़ न हो या दूसरे की नेचर को उसमें मिला न दें। अन्दर से अशरीरीपन की, आत्म-अभिमानी स्थिति की आदत पड़ी हुई है। बाबा ने हमारे खाने-पीने का, हमारे सोने का, हमारी हर प्रकार की उन्नति का ध्यान रखा है। सदा यही ख्याल रहा कि बाबा के बच्चे सब खुश रहे।

11) हर बात में बाबा को देखो, बाबा पत्र लिख रहा है तो भी कहेगा बाबा लिखा रहा है। बाबा भण्डारे में जायेगा तो भी कहेगा बाबा के भण्डारे में जा रहा हूँ। तो सदा ही बाबा को याद रहा कि यह शिवबाबा का यज्ञ है। कभी मेरा नहीं कहा। मिस्टेक तब होती है जब मेरा कहते हैं। मेरापन भारी करता है। मैं-पन का अभिमान थका देता है।

12) अभी हमें कभी भी अन्दर से रेस्टलेस नहीं होना है। जब रेस्ट नहीं होती है तो थोड़ा थकावट में आवाज ऐसा निकल जाता है, यह राँग है। जैसे विष्णु का लेटा हुआ पोज़ है। ऐसे बाबा ज्ञान का मंथन करते हर्षित है। ज्ञान से योग, उससे सेवा और उनसे ही सम्बन्ध। सम्बन्ध में सबके साथ आते जो कुछ करता है वो अच्छा ही करता है।

13) बाबा बच्चों की कोई भी कमी न सुनता है, न देखता है, सिर्फ अपना काम करता है। हम सुनते देखते हैं तो भविष्य थोड़ेही याद रहेगा! बाबा बच्चों को भी याद दिलाता है बच्चे विनाश के पहले सतयुगी राजधानी बनानी है। यह पुरानी दुनिया खत्म हुई पड़ी है, सिर्फ आप बच्चे तैयार हो जाओ। सतयुग में आने के लिए हर एक को अपनी प्रजा भी बनानी है। बाबा ने अपना सब कुछ समर्पण करके अपने को फ्री कर दिया। फिर करनी ऐसी की जो नारायण बन गया।

14) बेगरी पार्ट के समय भी बाबा को देखा बाबा के संस्कार, विचार बड़े रॉयल। ऐसे नहीं बेगरी पार्ट है ना... खिलाना, पिलाना, प्यार करना, इतना संस्कारों में परिपक्वता देखी। बाबा ने हर बच्चे को अपनी पालना दी, अन्दर से बेफिक्र होकर रहा। साकार में होते भी बाबा को कभी व्यक्त में नहीं देखा। हड्डी मांस दिखाई नहीं पड़ा। यह शरीर जैसे है ही नहीं। फिर इस शरीर द्वारा परमात्मा ने इतने ऊंचे कर्म किये।

15) इस बाबा को सतयुगी राज्य पाने की कोई इच्छा नहीं है, लेकिन उस राज्य में सब आत्मायें आयें सुखी रहें। यह संस्कार बाबा के शुरू से ही रहे। तो सतयुग में आने वाली आत्मायें, यहाँ संगम पर आके बाबा के पास सुखी रहें, शान्त रहें। सुख-शान्ति, प्रेम-आनन्द का वर्सा लें.. यह भावना सदा बनी रहे। हम जिसके भी संबंध सम्पर्क में रहें वो सुख शान्ति से सम्पन्न रहे, तो लगेगा हम फॉलो फादर कर रहे हैं।

16) एक है लव, दूसरी है लवलीन स्थिति। बाबा का प्यार खिंचवाना बड़े भाग्य की बात है। हमारी अन्त मति सो गति अच्छी हो, यज्ञ में कोई बात की कमी न हो, यह हमारे यज्ञ की शान है। ऐसे फिर परमात्म प्यार में जैसे अन्दर खोये हुए हैं। तो जो सामने आयेगा वो भी लीन हो जायेगा, गुम हो जायेगा। ऐसी लवलीन अवस्था जैसे पारस का काम करती है। सच की सदा जय होती है। मैं सत्यता की शक्ति को जमा करती जाऊं, तो सच में जो खुशी है वो शक्ति अनेक आत्माओं को मुक्त होने में मदद करेगी और जीवनमुक्ति का सुख पा सकेंगे। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

टेन्शन से मुक्त होने के लिए बैलेन्स से चलो, हर कर्म त्रिकालदर्शी होकर करो

1) बाबा ने हम बच्चों को प्रवृत्ति में रहते निवृत्त रहने, कर्म करते भी कर्म से अकर्मी बनने की पूरी नॉलेज दी है। जिस नॉलेज के आधार पर प्रवृत्ति में हम बैलेन्स रखकर चलते हैं। प्रवृत्ति को निभाते भी उससे निवृत्त रहने की शक्ति अपने पास जमा हो। निवृत्त रहने के लिए हर कर्म में आने से पहले अपने को डिटैच करो, एक सकेण्ड अशरीरी बनो फिर कर्म करो तो वह कर्म गलत नहीं हो सकता।

2) देही-अभिमानी बन फिर देह के भान में आकर कार्य व्यवहार शुरू करें तो उस कार्य का न अभिमान होगा, न बोझ होगा। न रांग होगा न डिस्टर्ब होंगे क्योंकि यह नॉलेज है कि मैं आत्मा साक्षी बनकर इन कर्मेन्द्रियों से यह कार्य कराती हूँ। तो साक्षी व दृष्टा बन इन कर्मेन्द्रियों के द्वारा ऐसे कर्म करेंगे जैसे ऊंची स्टेज पर बैठकर एक्टिंग देखते हैं। जो रांग कर्म होता है वह दिखाई पड़ता है। साक्षी हो कर्म करने से बैलेन्स आ जाता। लॉ और लव का बैलेन्स परमार्थ और व्यवहार का बैलेन्स... दोनों का सही-सही बुद्धि में जजमेन्ट रहे। अगर बुद्धि सही जजमेंट नहीं देती है, समय पर राइट टच नहीं होता है, तो रांग कर्म हो जाता फिर बुद्धि पर बोझ होता इसलिए अटेन्शन प्लीज़। माना स्व की सीट पर अटेन्शन से हरेक बात की रिजल्ट का मालूम पड़ता है।

3) त्रिकालदर्शी होने से जवाब मिलता - नथिंगन्यू। जो हुआ

कल्याणकारी हुआ। एकदम भविष्य का फायदा बुद्धि में टच होगा जबकि हम जानते हैं कि स्थापना भी होनी है तो विनाश भी होगा, अनेक प्रकार के सृष्टि के खेल चलेंगे तो खिलाड़ी बनकर खेल देखें या रोयें। टेन्शन माना मन का रोना। खिलाड़ी होकर खेलना माना हंसते-हंसते नाचते रहना। तो हम बाबा के साथ इस सृष्टि रूपी खेल में खिलाड़ी हैं। खिलाड़ी बनकर खेल को देखते तो मजा ही मजा है। हम जो कर्म करते हैं उसके लिए हमें हर प्रकार की नॉलेज हो। नॉलेज इज पॉवर।

4) अपनी स्थिति को ऊंचा रखने के लिए बाबा ने हमें मन्त्र दिया है - मनमनाभव, मध्याजी भव और मामेकम् याद करो। यह मन्त्र ही अजपाजाप है। बाबा से हमें पहला वर्सा मिला है - ज्ञान रत्नों का, दूसरा वर्सा है सर्वशक्तियों का। जब स्वयं आलमाइटी ने हमें शक्तियां दी, अथॉरिटी दी तो स्थिति कमजोर क्यों बनती! सब कारणों का निवारण है शक्तियां। हम शिव शक्ति पाण्डवों के सामने यह माया क्या है! बाबा कहते यह माया है छुई मुई। इसे अंगुली दिखाओ तो मुरझा जायेगी। अगर संकल्प की सृष्टि बनाओ तो बड़ी माया है। संकल्प को शक्तिशाली बनाओ तो माया छुईमुई हो जायेगी। तो माया से बचने का साधन है - अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान के बच्चे समझो, शक्तिशाली रहने से माया की शक्ति छू नहीं सकती।

5) बाबा कहते बच्चे, तुम अपने स्वमान में, नशे में रहो। अपनी स्वस्थिति स्वमान पर रखो तो हर प्रकार की माया से ऊपर रहेंगे। माया हमारी परछाई है, उसको पीठ दे दो तो पांव पड़ेगी लेकिन उसका स्वागत करो तो सिर पर चढ़ेगी। हम तो देवता बनने वाली आत्मा हैं, हमारे सिर पर लाइट का क्राउन है, रावण के सिर पर गधे का शीश है। बाबा हमें अपने गोल्ड हस्तों से रोज़ अमृतवेले लाइट माइट से सिर की मालिश कर ताज पहना देता है। हम लाइट माइट का ताज पहने हुए महावीर महावीरनियां हैं।

6) रोज़ अमृतवेले विशेष संकल्प लो कि हमें अन्तर्मुखी रहना है। स्वचिन्तन करना है। कभी बाह्यमुखता में नहीं आओ। किसी दिन संकल्प रखो कि आज कम बोलेंगे, धीरे बोलेंगे, मीठा बोलेंगे। फिर सारे दिन यह प्रैक्टिस करो। किसी दिन संकल्प करो आज बेहद की दुनिया से उपराम रहना है। आज सारे दिन गम्भीर, धैर्यवत रहना है। आज विश्व के कल्याण के लिए सारा दिन शुभ भावनाओं का दान देना है। आज सबको शान्ति का दान देना है। कभी संकल्प करो आज हमें सब भक्तों का ईष्ट देव बन उनकी मनोकामना पूरी करनी है।

7) जन्म लेते ही बाबा ने कहा - आओ मेरे विजयी रत्न बच्चे आओ। तो यह विजय का वरदान हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। वरदानों का ताज सदा पहनकर रखो। हम विजयी थे, विजयी हैं, विजयी रहेंगे। फिर देखो कितनी शक्ति आ जाती है। जब खेलने जाते हैं तो कभी यह संकल्प नहीं करते कि खेल में हार होगी। माया अगर शेरनी है तो हम शेर हैं लेकिन माया तो बिल्ली है। हम तो अवतरित हुई आत्मायें हैं। अवतार माना ही पवित्र। हम पवित्र आत्मा थे, हैं और रहेंगे। माया को चैलेन्ज करो तो माया मन्सा में भी तूफान ला नहीं सकती।

8) हम सतयुग के सच्चे कोहिनूर हीरे हैं, आजकल के झूठे पत्थर नहीं हैं। ऐसे अनेक स्वमान हैं जिनकी स्मृति में रहो तो मन्सा शुद्ध हो जायेगी। विजयी माला के ऐसे मोती बनो जो दाना, दाने से मिल जाए। बीच में धागा बिल्कुल दिखाई न दे।

9) हम तपस्वी कुमार हैं, हमें तपस्या करनी है। कल कुछ भी थे राइट थे, रांग थे, बुरे थे उसे आज जीरो लगा दो। जीरो लगाने से हीरो बन जायेंगे। तीन बिन्दु का तिलक लगाओ – मैं आत्मा बिन्दू, बाबा बिन्दू और ड्रामा बिन्दु। यह तीन बिन्दु साथ हैं तो न स्थिति नीचे आयेगी, न डिस्टर्ब होंगे। न अपने को डिस्टर्ब करो न दूसरों को।

10) बाबा ने कहा है तुम छोटे बड़े सब वानप्रस्थी हो। वानप्रस्थी माना सब झंझटो से परे। हम कोई मौनी बाबा नहीं हैं, लेकिन बाहर के वातावरण से परे हैं। जब वानप्रस्थी होकर रहना है तो फालतू बातों में व्यवहारों में टाइम वेस्ट नहीं करना है। अपने समय को शक्ति को सफल करना है। न टाइम वेस्ट हो, न एनर्जी वेस्ट हो। शुभ भावना, शुभ कामना से हर कर्म करो। पॉजिटिव सोचो। वैर, विरोध, नफरत आदि की बातों में न जाओ।

11) हम हैं उद्धार मूर्त, हमें तो पापियों का, अहिल्याओं का, सबका उद्धार करना है। सदा अपने पॉजिटिव संकल्पों में रहो तो सदा ओ.के.रहेंगे। कोई भी क्वेश्चन नहीं आयेगा। किसी भी बात में न विचलित हो, न करो। योगी का गुण है अचल, अडोल, स्थिर, अखण्ड, निर्विघ्न। इसी लक्ष्य को सामने रखकर लक्षण धारण करो।

12) मुझ योगी को हर परिस्थिति में अपनी स्थिति अचल और अडोल रखनी है, संकल्प में भी मुझे खण्डित मूर्ति नहीं बनना है। फिर देखो कितना चित शान्त और शीतल रहता है। बुद्धि स्थिर रहती है। संस्कार ठण्डे पड़ जाते हैं। ज्ञान से पुराने स्वभाव को खत्म करो। स्व के भाव में रहो।

13) मनुष्य माना ही देह-अभिमानी। हम मनुष्य नहीं हैं। हम देही-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते अर्थात् स्व के भाव में रहते हैं इसलिए किसी भी आदत के वश नहीं बनो, लेकिन आदतों को वश करो। चिंता को गेट आउट करो। आप मुये मर गई दुनिया। सभी मिट्टी में मिल जाने हैं। तो इन सबको बुद्धि से भूलो, इसी में ही अतीन्द्रिय सुख है। सदा शुभ सोचो, शुभ देखो, शुभ बोलो, शुभ भावना आज नहीं तो कल अपना काम करेगी। अच्छा - ओम् शान्ति।